संवाद दर्शन

सहयोग राशि-5/-

विक्रम संवत : 2082 | वर्ष : 2025

हिन्दी पाक्षिक

अंक : नवंबर (द्वितीय)

राष्ट्रभक्ति का जयघोष मंत्र "वंदे मातरम्"

प्रधानमंत्री ने कृषि क्षेत्र में दो बड़ी योजनाएं शुरू की

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जयप्रकाश नारायण और नानाजी देशमुख की स्मृति में 34 हजार 440 करोड रुपए की लागत से दो बड़ी योजनाएं शुरू की। इन दो योजनाओं में एक **धन धान्य कृषि योजना और दूसरी दलहन आत्मनिर्भर योजना है।** धन्य धन्य कृषि योजना की लागत 24 हजार करोड रुपए है वही दलों में आप निर्भर मिशन के लिए 11 हजार 440 करोड रुपए आवंटित किए गए हैं।

नई दिल्ली के इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टिट्यूट में 11 नवंबर को एक विशेष कृषि कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने इन योजनाओं को प्रारंभ किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि 11 नवंबर एक ऐतिहासिक दिन है। यह मां भारती के दो महान सपूतों की जयंती है। जिन्होंने भारत के लोकतांत्रिक ताने बाने और ग्रामीण विकास को फिर से परिभाषित किया था।

जयप्रकाश नारायण जी और नाना जी देशमुख ग्रामीण भारत की आवाज थे। उन्होंने अपना जीवन किसान और वंचितों की सशक्तिकरण के लिए समर्पित कर दिया था।

धन–धान्य कृषि योजना का उद्देश्य खेती की उत्पादकता को बढ़ाना, फसल की विविधता और टिकाऊ खेती के तरीके को अपनाना एवं पंचायत और ब्लॉक लेवल पर फसल कटाई के बाद स्टोरेज को बढ़ाना है। यह सिंचाई सुविधाओं में सुधार और चयनित 100 जिलों में दीर्घकालिक और अल्पकालिक ऋण की उपलब्धता को सुगम भी बनाएगा। इसके पीछे की प्रेरणा सीधे एस्पिरेशनल डिस्टिक मॉडल की सफलता से आती है। देश के 100 जिलों का चुनाव सोच समझकर और तीन खास पैरामीटर के आधार पर किया गया है। पहला जमीन की हर यूनिट पर खेती का उत्पादन, दूसरा 1 साल में एक ही जमीन पर कितनी बार फसलें उगाई जाती हैं और तीसरा किसानों के लिए इंस्टीट्यूशन लोन या इन्वेस्टमेंट सुविधाओं की उपलब्धता और सीमा है।

वही दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का उद्देश्य दालों के उत्पादकता स्तर में सुधार लाना, दलहन की खेती के तहत क्षेत्र का विस्तार करना एवं मूल्य श्रृंखला– खरीद, भंडारण एवं प्रसंस्करण को मजबूत करना है। इसके साथ ही नुकसान में कमी को भी सुनिश्चित करना है। प्रधानमंत्री ने इसके बारे में बताया कि भारत विश्व के प्रमुख अनाज उत्पादक देशों में है लेकिन गुजारे के लिए सिर्फ आटा और चावल से आगे देखने की जरूरत है। इस दालों से देश की आने वाली पीढ़ियां मजबूत बनती है। प्रोटीन खासकर भारत की ज्यादातर शाकाहारी आबादी के लिए शारीरिक और मानसिक विकास में बहुत जरूरी भूमिका निभाता है। दाले प्लांट बेस्ड प्रोटीन की सबसे बड़ी स्रोत बनी हुई है।

दलहन आत्मनिर्भरता मिशन का उद्देश्य घरेलू दाल उत्पादन को बढ़कर इस चुनौती का समाधान करना है। इससे न्यूट्रीशनल सिक्योरिटी और आत्म निर्भरता बढ़ेगी। दलहन आत्मनिर्भर मिशन से किसानों को काफी मदद मिलेगी। दालों की खेती का एरिया 35 लाख हेक्टेयर बढ़ाना लक्ष्य रखा गया है। इस मिशन के तहत अरहर, उड़द और मसूर दालों का उत्पादन बढ़ाया जाएगा और दालों की खरीद का सही व दुरुस्त तंत्र विकसित किया जाएगा। इससे देश भर के लगभग दो करोड़ दाल उत्पादक किसानों को सीधा फायदा होगा।

संवाद दर्शन
हिन्दी पाक्षिक

सलाहकार संपादक
देवेन्द्र मिश्र

संपादक
संजीव कुमार

प्रकाशक एवं मुद्रक
बिमल कुमार जैन

प्रिंटर्स
लोकवाणी प्रिंटिंग प्रेस,
शशि काम्प्लेक्स,
नाला रोड, कदमकुआँ
पटना

पता
विश्व संवाद केंद्र
104-105, सूर्या अपार्टमेंट,
फ्रेजर रोड, पटना - 800 001
संपर्क = 0612 2216048

ई-मेल- vskpatna@gmail.com
vskbihar@gmail.com
वेबसाइट- www.vskbihar.com

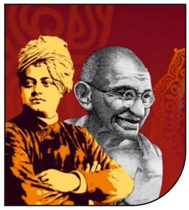

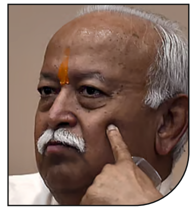
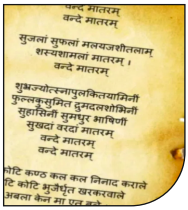

अनुक्रमणिका

जनोपयोगी .... -----
बोध कथा 02
सनातन साहित्य 03
उद्‍भेदन 05
संघ शताब्दी वर्ष 07
आमुख 09
उपलब्धि 13
स्वास्थ्य 14
जिहाद 16

पाठकों के नाम पत्र

प्रिय पाठक,
सादर नमस्कार।
आशा है आप स्वस्थ एवं सानंद होंगे। विदित हो कि 'संवाद दर्शन' पत्रिका राष्ट्र तथा प्रदेश की घटनाओं और महत्वपूर्ण बिन्दुओं को आधार बनाकर प्रकाशित हो रही है। आपका स्नेह हमेशा प्राप्त होता रहता है। पत्रिका द्वारा सदस्यों/ पाठकों के नाम, पता, दूरभाष तथा ई–मेल में सुधार के लिए योजना चलायी जा रही है। संवाद दर्शन परिवार आशा करता है कि पत्रिका आप तक पहुंच रही होगी। यदि नहीं पहुंच रही है तो आप हमारे दूरभाष पर संपर्क कर या हमारे पते पर पत्र लिखकर अपने पता का सुधार करवा सकते हैं।
शेष शुभ!

प्रणाम का परिणाम

महाभारत का युद्ध चल रहा था – एक दिन दुर्योधन के व्यंग्य से आहत होकर 'भीष्म पितामह' घोषणा कर देते हैं कि – ''मैं कल पांडवों का वध कर दूँगा' उनकी घोषणा का पता चलते ही पांडवों के शिविर में बेचौनी बढ़ गई – भीष्म की क्षमताओं के बारे में सभी को पता था इसलिए सभी किसी अनिष्ट की आशंका से परेशान हो गए।''

तब –श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा अभी मेरे साथ चलो –श्रीकृष्ण द्रौपदी को लेकर सीधे भीष्म पितामह के शिविर में पहुँच गए –शिविर के बाहर खड़े होकर उन्होंने द्रोपदी से कहा कि – अन्दर जाकर पितामह को प्रणाम करो – द्रौपदी ने अन्दर जाकर पितामह भीष्म को प्रणाम किया तो उन्होंने 'अखंड सौभाग्यवती भव! का आशीर्वाद दे दिया , फिर उन्होंने द्रोपदी से पूछा कि ''तुम इतनी रात में अकेली यहाँ कैसे आई हो, क्या तुमको श्रीकृष्ण यहाँ लेकर आये है?''

तब द्रोपदी ने कहा कि –'हां और वे कक्ष के बाहर खड़े हैं' तब भीष्म भी कक्ष के बाहर आ गए और दोनों ने एक दूसरे से प्रणाम किया – भीष्म ने कहा – ''मेरे एक वचन को मेरे ही दूसरे वचन से काट देने का काम श्रीकृष्ण ही कर सकते हैं।''

शिविर से वापस लौटते समय श्रीकृष्ण ने द्रौपदी से कहा कि – ''तुम्हारे एक बार जाकर पितामह को प्रणाम करने से तुम्हारे पतियों को जीवनदान मिल गया है। अगर तुम प्रतिदिन भीष्म, धृतराष्ट्र, द्रोणाचार्य, आदि को प्रणाम करती होती और दुर्योधन– दुःशासन, आदि की पत्नियां भी पांडवों को प्रणाम करती होंती, तो शायद इस युद्ध की नौबत ही न आती।''

वर्तमान में हमारे घरों में जो इतनी समस्यॉए हैं उनका भी मूल कारण यही है कि –जाने अनजाने अक्सर घर के बड़ों की उपेक्षा हो जाती है। यदि घर के बच्चे और बहुएँ प्रतिदिन घर के सभी बड़ों को प्रणाम कर उनका आशीर्वाद लें तो, शायद किसी भी घर में कभी कोई क्लेश न हो।

बड़ों के दिए आशीर्वाद कवच की तरह काम करते हैं, उनको कोई 'अस्त्र–शस्त्र' नहीं भेद सकता – सभी इस संस्कृति को सुनिश्चित कर नियमबद्ध करें तो घर स्वर्ग बन जाय। क्योंकि – प्रणाम प्रेम है, प्रणाम अनुशासन है, प्रणाम शीतलता है, प्रणाम आदर सिखाता है, प्रणाम से सुविचार आते है, प्रणाम झुकना सिखाता है, प्रणाम क्रोध मिटाता है, प्रणाम आँसू धो देता है, प्रणाम अहंकार मिटाता है, प्रणाम हमारी संस्कृति है।

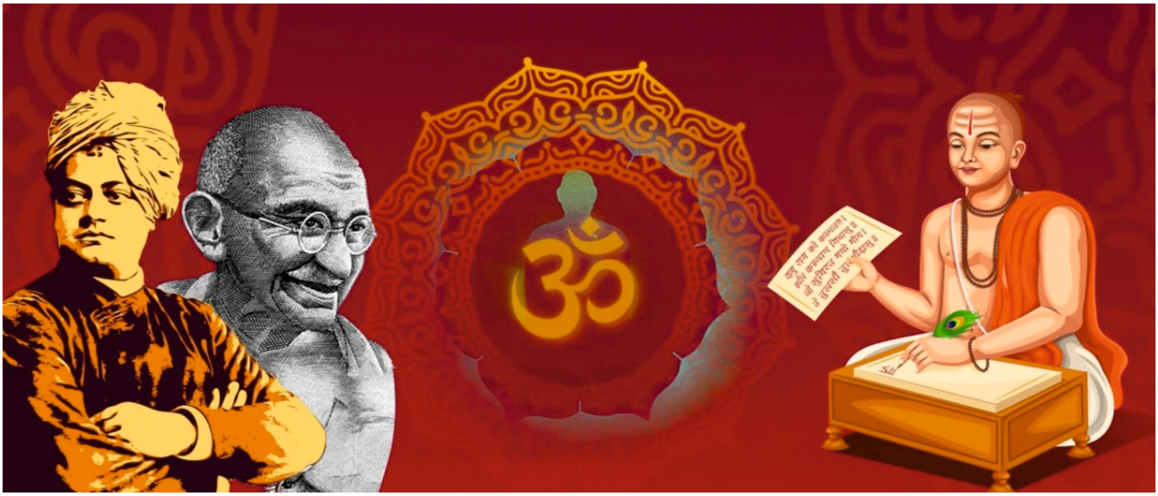

गर्व कीजिए अपने सनातन साहित्य पर...

रामधाम समानेनम् आगोरोधनम् आस ताम्।
नामहाम् अक्षररसं ताराभाः तु न वेद या ॥ ४ ॥

राम की अलौकिक आभा – जो सूर्यतुल्य है, जिससे समस्त पापों का नाश होता है दृ से पूरा नगर प्रकाशित था। उत्सवों में कमी ना रखने वाला यह नगर, अनन्त सुखों का श्रोत तथा तारों की आभा से अनभिज्ञ था (ऊंचे भवन व वृक्षों के कारण)।

यादवेनः तु भाराता संरक्ष महामनाः।
तां सः मानधरः गोमान् अनेमासमधामराः ॥ ४ ॥

यादवों के सूर्य, सबों को प्रकाश देने वाले, विनम्र, दयालु, गऊओं के स्वामी, अतुल शक्तिशाली के श्रीकृष्ण द्वारा द्वारका की रक्षा भलीभांति की जाती थी।

यन् गाधेयः योगी रागी वैताने सौम्ये सौख्ये असौ।
तं ख्यातं शीतं स्फीतं भीमान् आम अश्रीहाता त्रातम् ॥ ५ ॥

गाधीपुत्र गाधेय, यानी ऋषि विश्वामित्र, एक निर्विघ्न, सुखी, आनददायक यज्ञ करने को इक्षुक थे पर आसुरी शक्तियों से आक्रान्त थेय उन्होंने शांत, शीतल, गरिमामय त्राता राम का संरक्षण प्राप्त किया था।

तं त्राता हा श्रीमान् आम अभीतं स्फीतं शीतं ख्यातं।
सौख्ये सौम्ये असौ नेता वै गीरागी यः योधे गायन ॥ ५ ॥

नारद मुनि दृ दैदीप्यमान, अपनी संगीत से योद्धाओं में शक्ति संचारक, त्राता, सद्गुणों से भरपूर, ब्राहमणों के नेतृत्वकर्ता के रूप में विख्यात दृ ने विश्व के कल्याण के लिए गायन करते हुए श्रीकृष्ण से याचना की जिनकी ख्याति में वृद्धि एक दयावान, शांत परोपकार को इक्षुक, के रूप में दिनोदिन हो रही थी।

मारमं सुकुमाराभं रसाज आप नृताश्रितं।
काविरामदलाप गोसम अवामतरा नते ॥ ६ ॥

लक्ष्मीपति नारायण के सुन्दर सलोने, तेजस्वी मानव अवतार राम का वरण, रसाजा (भूमिपुत्री) – धरातुल्य धैर्यशील, निज वाणी से असीम आनन्द प्रदाता, सुधि सत्यवादी सीता दृ ने किया था।

तेन रातम् अवाम अस गोपालात् अमराविक।
तं श्रित नृपजा सारभं रामा कुसुमं रमा ॥ ६ ॥

नारद द्वारा लाए गए, देवताओं के रक्षक, निज पति के रूप में प्राप्त, सत्यवादी कृष्ण, के द्वारा प्रेषित, तत्वतः (वास्तव में) उज्जवल पारिजात पुष्प को नृपजा (नरेश–पुत्री) रमा (रुक्मिणी) ने प्राप्त किया।

रामनामा सदा खेदभावे दयावान् अतापीनतेजाः रिपौ आनते।
कादिमोदासहाता स्वभासा रसामे सुगः रेणुकागात्रजे भूरुमे ॥ ७ ॥

श्री राम – दुःखियों के प्रति सदैव दयालु, सूर्य की तरह तेजस्वी मगर सहज प्राप्य, देवताओं के सुख में विघ्न डालने वाले राक्षसों के विनाशक – अपने बैरी – समस्त भूमि के विजेता, भ्रमणशील रेणुका–पुत्र परशुराम – को पराजित कर अपने तेज–प्रताप से शीतल शांत किया था।

मेरुभूजेत्रगा काणुरे गोसुमे सा अरसा भास्वता हा सदा मोदिका।
तेन वा पारिजातेन पीता नवा यादवे अभात् अखेदा समानामर ॥ ७ ॥

अपराजेय मेरु (सुमेरु) पर्वत से भी सुन्दर रैवतक पर्वत पर निवास करते समय रुक्मिणी को स्वर्णिम चमकीले पारिजात पुष्पों की प्राप्ति उपरांत धरती के अन्य पुष्प कम सुगन्धित, अप्रिय लगने लगे। उन्हें कृष्ण की संगत में ओजस्वी, नवकलेवर, दैवीय रूप प्राप्त करने की अनुभूति होने लगी।

सारसासमधात अक्षिभूम्ना धामसु सीतया।
साधु असौ इह रेमे क्षेमे अरम् आसुरसारहा ॥ ८ ॥

समस्त आसुरी सेना के विनाशक, सौम्यता के विपरीत प्रभावशाली नेत्रधारी रक्षक राम अपने अयोध्या निवास में सीता संग सानंद रह रहे है थे।

हारसारसुमा रम्यक्षेमेर इह विसाध्वसा।
य अतसीसुमधाम्ना भूक्षिता धाम ससार सा ॥ ८ ॥

अपने गले में मोतियों के हार जैसे पारिजात पुष्पों को धारण किए हुए, प्रसन्नता व परोपकार की अधिष्ठात्री, निर्भीक रुक्मिणी, आतशी पुष्पधारी कृष्ण संग निज गृह को प्रस्थान कर गयी।

कवि का परिचय :

इस अद्भुत रचना के रचने वाले श्री वेंकटाध्वरि का जन्म कांचीपुरम के एक गांव अरसनीपलै में हुआ था। इन्होंने कुल 14 रचनाएं लिखी हैं, जिनमें से श्राघवयादवीयम्श और श्लक्ष्मीसहस्त्रम्श अत्यंत प्रसिद्ध हैं। वेंकटाध्वरि श्री वेदांत देशिक के शिष्य थे, जिन्होंने इनको शास्त्रों की शिक्षा दी।

बचपन में ही दृष्टि दोष से बाधित होने के बावजूद वे मेधावी व कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। उन्होंने वेदान्त देशिक का, जिन्हें वेंकटनाथ (1269–1370) के नाम से भी जाना जाता है तथा जिनकी श्पादुका सहस्रम्श नामक रचना चित्रकाव्य की अनुपम् भेंट है, अनुयायी बन काव्यशास्त्र में महारत हासिल की। वेंकटाध्वरि श्री ने 14 ग्रन्थों की रचना की। श्लक्ष्मीसहस्रम्श के बारे में ऐसा कहा जाता है कि इस ग्रंथ की रचना पूर्ण होते ही उनकी दृष्टि उन्हें वापस प्राप्त हो गयी थी।

ज्योति बसु राज में अपमान की मौत मरे मिहिर सेन

ज्योति बसु ने अपने जिंदगी में बहुत सारे पाप किए थे। उनके पापों की मारीच्झापि नरसंहार से लेकर लंबी श्रृंखला है। लेकिन बहुत कम लोगों को मालूम है कि उनकी क्रूरता के शिकार अंतर्राष्ट्रीय तैराक मिहिर सेन भी हुए थे। मिहिर सिंह पहले भारतीय थे जिन्होंने इंग्लिश चौनल को तैरकर पार किया था। 1958 में इंग्लिश चौनल पार करने के बाद मिहिर सेन ने भारत सरकार के सहयोग से सात समुद्रों की यात्रा की थी। मिहिर सेन की अविस्मरणीय कार्य के लिए 1959 में पद्मश्री और 1967 में पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया था। उन्हें ब्लिट्ज नेहरू ट्रॉफी से भी सम्मानित किया गया था।

ऐसी मान्यता है कि बंगाली अच्छे व्यावसायी नहीं होते हैं लेकिन मिहिर सेन में इस मिथक को भी तोड़ा। उन्होंने सिल्क निर्यात के क्षेत्र में कार्य किया। उनके ईमानदारी और गुणवत्ता के कारण उनकी कंपनी कुछ ही दिनों में भारत की दूसरी सबसे बड़ी सिल्क निर्यातक कंपनी बन गई थी। इस बात पर भारत सरकार ने भी मुहर लगाई थी।

इसे किस्मत का दोष ही कहेंगे कि वे पश्चिम बंगाल में ज्योति बसु के राज में व्यवसाय करने की सोच रहे थे। उनकी तरक्की वाम गुंडागर्दी को रास नहीं आई। 1977 में पश्चिम बंगाल में विधानसभा का चुनाव होने वाला था। मिहिर सेन को आदेश दिया गया कि वे ज्योति बसु के लिए कैंपेनिंग करें।

उन्हें सरकार बनने पर एक प्रमुख पद का प्रलोभन भी दिया गया था। परंतु मिहिर सेन सिद्धांत के पक्के आदमी थे। उन्होंने इन सब चीजों से इनकार कर दिया और दूसरे ही दिन एक निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर अपना नामांकन दाखिल किया।

इस चुनाव में कामरेड ज्योति बसु बहुमत से सत्ता में आए और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री बने। ऐसा लोग कहते हैं कि सत्ता मिलने के बाद लोग विनम्र हो जाते हैं। पुराने राग– द्वेष भूल जाते हैं। लेकिन सत्ता में आने के बाद भी ज्योति बसु विनम्र नहीं हुए। अपनी मिहिर सेन के उम्मीदवारी को उन्होंने एक चुनौती के तौर पर लिया था। मिहिर सेन को बर्बाद करने के ।लिए उनके ऊपर वाम गुंडो की झुंड छोड़ दी।

धरना, धमकी और गुंडागर्दी दिनचर्या थी। अगर मिहिर सेन ट्रेड यूनियन की मांगों के समक्ष समर्पण नहीं करते तो उनके कार्यालय, दुकान और फैक्ट्री को पोस्टरों से पाट दिया जाता था। ट्रेड यूनियन सीटू के द्वारा वहां कई दिनों की बंदी होने लगी। यही हालात किद्दरपुर फैक्ट्री के भी थे। सोना उगलने वाली इकाइयां रातों–रात भूत बंगला में बदल गई।

सीपीएम के मुख्यालय अलीमुद्दीन स्ट्रीट से पुलिस को आदेश दिया गया कि इन सभी हालात पर उसे चुप रहना है। जब मिहिर सेन द्वारा यूनियन की अनावश्यक मांगो को मानने से इनकार कर दिया तो लाखों रुपए मूल्य के निर्यात के सामान जला दिए गए। पुलिस मूकदर्शक बनी रही। यूनियन की गुंडागर्दी के कारण मिहिर सेन का साम्राज्य ध्वस्त हो गया।

परंतु ज्योति बसु का बदला यहीं पूरा नहीं हुआ। उनके ऊपर झूठे केस लादे गए। पुलिस ने उनके मकान, उनकी कंपनी, उनकी फैक्ट्री अर्थात जहां भी उनसे संबंधित जगह थी वहां ताबड़तोड़ छापे मारे गए। उनके कैश, एसेट और प्रॉपर्टी को जब्त कर लिया गया। उनके परिवार को सड़क पर रहने को एक प्रकार से विवश किया गया। जिसके कारण हर भारतीय गौरवान्वित हुआ था, वह अपने परिवार के साथ बंगाल में खाने– खाने को मोहताज हो गया। जब मिहिर सेन 50 वर्ष के हुए तो उन्हें हृदयाघात हुआ। उनकी स्मृति चली गई लेकिन फिर भी उन्हें अपने ऊपर लगाए गए झूठे केस के कारण कोर्ट में नियमित रूप से पेशी देनी पड़ती थी। कोर्ट रूम में वामपंथी वकील उनका और उनकी पत्नी का मजाक उड़ाते थे लेकिन हिस्सा यहीं खत्म नहीं हुआ।

ज्योति बसु ने 1988 में उन्हें फिर से लेफ्ट फ्रंट से जुड़ने का आदेश भेजा लेकिन मिहिर सेन ने उसे कठोरता से ठुकरा दिया। यह वाम गुंडो को बड़ा नागवार गुजरा और उन लोगों ने मिहिर सेन की जिंदगी दुश्वार बना दी। 1997 में जब मिहिर सेन मरे तो उनके पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं थी। अपने पीछे वे अलीपुर में सिर्फ एक छोटा फ्लैट छोड़ गए थे। यह फ्लैट भी उन्हें एलआईसी द्वारा अलॉट किया गया था। उनके मरने के बाद भी उनके परिवार को नाना प्रकार के कष्ट दिए जाते रहे। उनकी बेटी सुप्रिया लंदन में रहती थी। कुछ वर्षों बाद उसे पता चला कि उसके अलीपुर फ्लैट को तहस–नहस कर दिया गया था। मिहिर सेन के सभी पदकों को, जिसमें पद्मश्री और पद्म भूषण पदक भी थे, चुरा लिए गए थे। उन्हें फ्लैट खाली करने के लिए लगातार धमकी दी जाती थी। जब भी सुप्रिया ने स्थानीय पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज करने की कोशिश की तो कोई भी निष्कर्ष नहीं निकला। कोलकाता के पुलिस कमिश्नर से भेंट करने पर भी कोई फायदा नहीं हुआ। और इस प्रकार मिहिर सेन और उसके परिवार की जिंदगी ज्योति बसु और वाम गुंडों ने बर्बाद कर दी।

सहकार, कृषि और उद्योग हमारे विकास के आधार स्तंभ : डॉ. मोहन भागवत

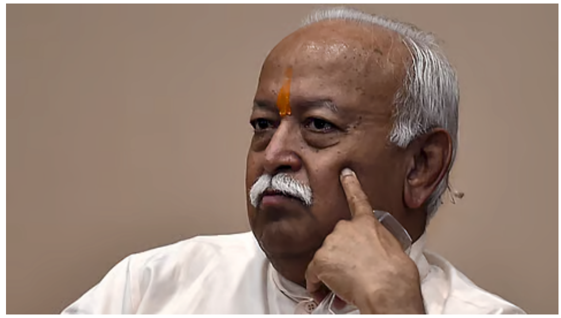

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने जयपुर में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सहकार, कृषि और उद्योग हमारे विकास के आधार स्तंभ हैं। कृषि, व्यापार, उद्योग परस्पर निर्भर होकर तीनों एक साथ प्रगति कर सकते हैं। छोटे और मध्यम उद्योग अर्थव्यवस्था को विकेंद्रित करते हैं। इन उद्योगों को अपने देश के अंदर सुचारू रूप से चलने का वातावरण देना, यह बड़े उद्योगों का काम है। छोटे उद्योगों को रोजगार, कौशल, उत्पादन की गुणवत्ता और उत्पादन बढ़ाना चाहिए।

जयपुर के कांस्टीट्यूशन क्लब में 13 नवंबर को संघ शताब्दी वर्ष के अंतर्गत उद्यमी संवाद का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर सरसंघचालक जी ने संघ के बारे में अपने विचार रखते हुए कहा कि संघ को प्रत्यक्ष अनुभव किए बिना संघ के बारे में राय मत बनाइए। संघ से जुड़ने के लिए शाखा में जाना होगा। इसमें आपको जो अनुकूल लगे, वह काम आप कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि संघ के 100 वर्ष की यात्रा पूर्ण होने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम कोई सेलिब्रेशन नहीं है, बल्कि आगे के चरण की दृष्टि से अपने कार्य की वृद्धि का विचार करने के लिए कार्यक्रम किए जा रहे हैं। राष्ट्र को परम वैभव संपन्न और विश्वगुरु बनाना किसी एक व्यक्ति के वश में नहीं है। यह सबका काम है और इसके लिए सबको साथ लेकर चलना है।

उन्होंने कहा कि संघ की स्थापना किसी एक विषय को लेकर नहीं हुई। संघ संस्थापक डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार क्रांतिकारी थे। वे इंडियन नेशनल कांग्रेस के बहुत सक्रिय कार्यकर्ता थे। दो बार जेल भी गए। असहयोग आंदोलन में उन पर राजद्रोह का अभियोग लगा। उन्होंने बचाव में पक्ष रखना चुना क्योंकि इससे दोबारा भाषण का मौका मिलता। उनके बचाव भाषण को सुनकर जज को कहना पड़ा कि उनका बचाव भाषण पहले भाषण से भी अधिक राजद्रोही है। डॉ. हेडगेवार ने अनुभव किया कि समाज में डेढ़ हजार साल से जो दुर्गुण आ रहे थे, उन्हें दूर करना जरूरी है। उन्हें महसूस हुआ कि संपूर्ण हिन्दू समाज को संगठित किए बिना भारत इस पुरानी बीमारी से मुक्त नहीं होगा। इसलिए उन्होंने एक दशक तक विचार और प्रयोगों के बाद संघ की स्थापना की।

उन्होंने संघ कार्य के आगामी चरण के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि सारा समाज देश हित में जिए, ये संघ का आगे का काम है। समाज की सज्जन शक्ति जागृत हो, सामाजिक समरसता का वातावरण बने और मंदिर, पानी, श्मशान सबके लिए खुले होने चाहिए। परिवार के सभी सदस्य सप्ताह में कम से कम एक बार एकत्र आएं और अपना भोजन एवं भजन, अपनी भाषा और अपनी परंपरा के अनुसार करें। पानी बचाने, पेड़ लगाने और प्लास्टिक हटाने जैसे पर्यावरण संरक्षण के कार्यों के लिए भी हमें आगे आना चाहिए। स्व का बोध और स्वदेशी का भाव सबके मन में जागृत हो, देश स्वनिर्भर बने। नागरिक कर्तव्य और नागरिक अनुशासन के प्रति हम सजग बनें और नियम, कानून, संविधान का पालन करें।

सारा समाज एक बनकर अपना–अपना काम अपनी–अपनी पद्धति से करे ताकि हम सभी एक दूसरे के बाधक नहीं, बल्कि पूरक बनें।

स्वतंत्रता का अर्थ स्वदेशी तंत्र का निर्माण करना भी है – पराग अभ्यंकर जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भुवनेश्वर महानगर द्वारा उत्कल विश्वविद्यालय के दीक्षांत ऑडिटोरियम में आयोजित युवा सम्मेलन के समापन सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय सेवा प्रमुख पराग अभ्यंकर ने कहा कि स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ केवल विदेशी अधीनता से मुक्ति नहीं है, बल्कि अपनी उन्नति और राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए स्वदेशी तंत्र का निर्माण करना भी है।

उन्होंने कहा कि 15 अगस्त, 1947 को स्वाधीनता मिल गई अर्थात् किसी की अधीनता से मुक्त हो गए, आजाद हो गए। अपने निर्णय लेने के लिए अंग्रेज वायसराय पर डिपेंडेंट नहीं थे, इसलिए हम इंडिपेंडेंट कहलाए। अपनी नियति डेस्टिनी का निर्णय करने के लिए सक्षम हो गए। परन्तु स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ है अपनी वास्तविक उन्नति, लक्ष्य प्राप्त करने के लिए अपना तंत्र निर्माण कर लेना। उन्होंने कहा कि आज भी हमारी पहचान "इंडिया दैट इज भारत" के रूप में होती है, जबकि केवल "भारत" या "हिंदुस्तान" नाम ही स्वीकार करना चाहिए था।

उन्होंने कहा कि हजारों वर्षों तक जिस शिक्षा, न्याय और आर्थिक नीति के तंत्र के माध्यम से हमने विश्वगुरु तथा सोने की चिड़िया का दर्जा प्राप्त किया था, उसे भूलकर गुलामी के दौर की ही शिक्षा, न्याय और आर्थिक नीति पर हमारा शासन तंत्र गत 75 वर्षों तक चला। अर्थात्, हमने अपने तंत्र को अपनाने के बजाय विदेशी तंत्र को स्वीकार किया। जब हम प्राचीन भारतीय नीतियों को अपनाएंगे, तभी हम वास्तव में स्वतंत्र कहलाएंगे। जब भारत अपने प्राचीन भारतीय नीतिगत तंत्र को पुनः स्थापित करेगा, तभी हम सच्चे अर्थों में स्वतंत्र कहलाएंगे।

भारत की विश्व के प्रति क्या भूमिका है, यह स्वामी विवेकानंद जी ने 1897 में लाहौर के भाषण में बताया था। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के 1897 के लाहौर भाषण का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत की नियति विश्व बंधुत्व और शांति के जीवन मूल्यों को पूरे विश्व में फैलाने की है। इन जीवन मूल्यों को समाज के प्रत्येक व्यक्ति के भीतर जागृत करने की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा "जब त्याग और सेवा की भावना समाज तथा शासन – दोनों के तंत्र में प्रतिष्ठित होगी, तभी हम कह सकेंगे कि सच्चा स्वातंत्र्य प्राप्त हुआ है।"

उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाएं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गत 100 वर्षों से इसी कार्य में लगा हुआ है। युवाओं की सहभागिता से इसे आगे बढ़ाना है।

उत्कल विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. यज्ञेश्वर दण्डपाट समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इससे पहले सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. श्रीकांत मिश्र ने कहा कि संघ अपने 100 वर्षों के कार्यकाल में अपने लक्ष्य की दिशा में निरंतर प्रगति कर रहा है। मुख्य वक्ता तन्मय महापात्र ने कहा कि भारत की महान संस्कृति, शिक्षा, इतिहास और स्वास्थ्य व्यवस्था के कारण विदेशों में भी प्रतिष्ठित थी। देश के निर्माण में युवाओं की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण रही है और स्वतंत्रता संग्राम के दौरान युवाओं का योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकता।

वंदे मातरम् केवल गीत नहीं,राष्ट्रभक्ति का जयघोष मंत्र है

स्वतंत्रता अमूल्य है और यह हमें अनथक प्रयासों के कारण मिली है। हमारी स्वतंत्रता के लिए हमारे पूर्वजों ने अपने जीवन का बलिदान दिया है। पूरे–पूरे परिवार इस ईश्वरीय कार्य में लग गए, ऐसे असंख्य उदाहरण हैं। स्वतंत्रता के लिए बहुमुखी प्रयास अपने भारत में हुआ। ऐसा ही एक प्रयास जिसने देश के युवाओं व क्रांतिकारियों में नए जोश व उत्साह का संचार किया, वो प्रयास है दृ वंदे मातरम् की रचना। मातृभू की अर्चना के लिए एक काव्य गीत बना जो स्वतंत्रता सेनानियों का जयघोष मंत्र बन गया।

- स्वतंत्रता संग्राम में जिन साहित्यकारों ने जनजागरण में अपना सहयोग दिया, उनमें बंकिमचन्द्र का नाम प्रथम पंक्ति में लिया जाता है। 07 नवम्बर 1875 (कार्तिक शुक्ल नवमी अक्षया नवमी, जगधात्री पूजा दिवस) को उन्होंने वन्देमातरम काव्य गीत की रचना की। परंतु उस समय यह गीत सभी के सामने नहीं आया। कुछ लोगों ने इस गीत को प्रकाशित करने के लिए बंकिमचन्द्र से विशेष आग्रह किया। 1880 में क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत फड़के की आत्मकथा का भाषा रूपांतरण व प्रकाशन बांग्ला भाषा में हुआ। इस आत्मकथा का बंकिमचन्द्र के मानस पटल पर विशेष प्रभाव पड़ा। बंगाल व बिहार में राष्ट्र रक्षा हेतु संन्यासी विद्रोह हुआ था। इस संन्यासी विद्रोह के घटनाक्रम का लेखन 'आनन्द मठ' नाम के ग्रन्थ में बंकिमचंद्र की लेखनी ने किया। डॉ. बिमनबिहारी मजुमदार कहते है – "It is just possible that the fight described by Vasudev Balwant (against the British) might have given inspiration for writing Anand Math-"

आनन्द मठ ग्रन्थ 'बंग दर्शन' नाम की पत्रिका में 1880 से 1882 के मध्य कड़ी के रूप में प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ एक पुस्तक के रूप में 1883 में प्रकाशित होकर समाज के सामने आया। इस आनन्द मठ पुस्तक में वंदे मातरम् काव्य गीत को जोड़ा गया। इस पुस्तक में प्रकाशन के कारण वंदे मातरम् सभी देशवासियों के सामने आया।

प्रसिद्ध लेखक हेमचंद्र कानूनगो ने कहा था : "तब हम इस बात को समझ नहीं पाए थे कि वंदे मातरम् गीत में इतनी शक्ति और भाव छिपा है।" श्री अरविंद ने कलकत्ता से प्रकाशित 'वंदे मातरम्' नाम के अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्र में (1906) वंदे मातरम् को मंत्र कहा। इस विषय में लिखा – "The mantra had been given and not in a single day] a whole people had been converted to the religion of patriotism-" "सम्पूर्ण देशवासियों का धर्म देशभक्ति हो गया था। यह मंत्र भारत में ही नहीं सारे विश्व में फैल गया था।" वे इस समाचार पत्र के सम्पादक थे।

1896 के कांग्रेस अधिवेशन में रवींद्रनाथ ठाकुर ने इस गीत को अपने कंठ से सर्वप्रथम गाया। 1905 में अंग्रेजों ने बंगाल का विभाजन किया। यह निर्णय अंग्रेजों द्वारा 17 जुलाई को लिया गया, जो 16 अगस्त 1905 से लागू होना था। यह विभाजन करने का उद्देश्य बंगाल में स्वतंत्रता आंदोलन के लिए तेजी से चल रही गतिविधियों को धीमा करना

था। परंतु अंग्रेजों को क्या पता था कि उनका यह कार्य स्वतंत्रता आंदोलन में ज्वार लाएगा।

कलकत्ता के टाउन हॉल में 07 अगस्त 1905 को बंग–भंग के निर्णय के विरुद्ध हजारों लोग एकत्र हुए और सभी के कंठ बोल रहे थे वंदे मातरम्। बंग–भंग आंदोलन से वंदे मातरम् जन–जन का जयघोष बन गया। और यह जयघोष केवल बंगाल ही नहीं, भारत व भारत से बाहर सभी के लिए जयघोष मंत्र बना। स्वतंत्रता आंदोलन की प्रत्येक छोटी बड़ी सभा में वंदे मातरम् गीत व जयघोष के रूप में गूंजता था। क्रांतिकारियों का आपसी अभिवादन वंदे मातरम् से होने लगा।

बंग–भंग आंदोलन के समय श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के मुख से वाक्य निकला : "Your inner most feeling should be in perfect harmony with the Raga and Bhav of Vande Matram."

1907 में नेशनल कॉलेज कलकत्ता के छात्र सुशील सेन ने पुलिस सार्जेंट ह्यू को एक घूसा जड़ दिया, इस पर अत्याचारी न्यायाधीश किंग्सफोर्ड ने सुशील को पंद्रह बेंत मारने की सजा दी। अगले दिन स्टेटमेन समाचार पत्र ने लिखा – "Every stock of whip was resounded with a cry of Vande Matram" (प्रत्येक बेंत की मार पर वंदे मातरम् की गूंज प्रतिध्वनित होती थी।)

इस पर काली प्रसन्न कवि ने लिखा –

"बेंत मेरे कि मां भुलाबि, आमरा कि माएर सेई छेले।

मोदेर जीवन जाय जेन चले, वंदे मातरम् बले।"

(बेंत मारकर क्या मां को भुलाएगा, हम क्या मां की ऐसी संतान है? वंदे मातरम् बोलते हुए हमारा जीवन भले ही चला जाए।)

अंग्रेज वंदे मातरम् से इतने क्रोधित थे कि उन्होंने इस गीत व जयघोष पर प्रतिबंध लगा दिया था। इस प्रतिबंध के बावजूद वंदे मातरम् का गायन रुका नहीं, बल्कि और अधिक तीव्र गति से बढ़ने लगा। सर्वसामान्य तक यह मंत्र पहुंचा तो अलग–अलग भारतीय भाषाओं में इस गीत का प्रकाशन होने लगा। लाला लाजपतराय ने वंदे मातरम् के नाम से पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। बंग–भंग आंदोलन से निकले स्वदेशी आंदोलन ने पूरे देश में व्यापक रूप ले लिया। आंध्र प्रदेश में इस आंदोलन का नाम 'वंदे मातरम् आंदोलन' ही कर दिया गया।विद्यालयों–महाविद्यालयों में वंदे मातरम् गीत व जयघोष का नाद होने लगा। चूंकि इस पर अंग्रेजों ने प्रतिबंध लगा रखा था तो ऐसा करने पर विद्यार्थियों को दंड मिलता था। केशव बलिराम हेडगेवार के नेतृत्व में नागपुर के नील सिटी हाई स्कूल में इंस्पेक्टर के आने पर छात्रों ने वंदे मातरम् का जयघोष किया। जिसके कारण बालक केशव को विद्यालय से निकाल दिया गया।

स्वतंत्र भारत में वंदे मातरम् (प्रथम दो चरण) को राष्ट्रीय गीत के रूप में अंगीकृत किया गया है। आज भी इस गीत को सम्पूर्ण गाते हैं तो उन हुतात्माओं का स्मरण हो आता है, जिन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन के महायज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी। यह गीत भाव रूप में उन सभी घटनाओं को समेटे हुए है जो वंदे मातरम् जयघोष के साथ घटित हुईं। यह केवल गीत नहीं, राष्ट्रभक्ति का जयघोष मंत्र है।

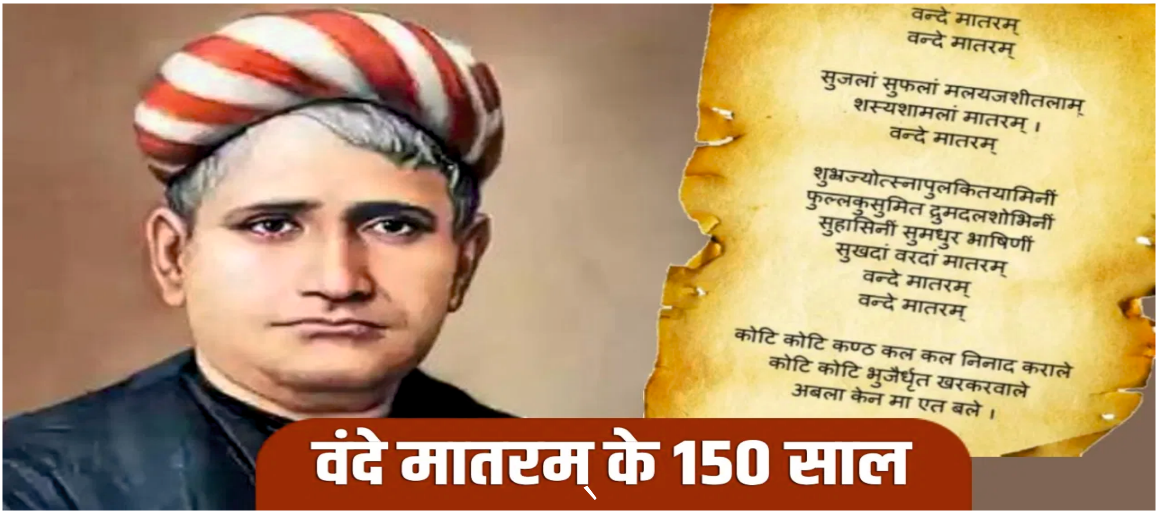

वंदे मातरम्, संन्यासी संघर्ष और बिहार

संजीव कुमार

देश वंदे मातरम् के 150 वर्ष मना रहा है। वंदे मातरम गीत "आनंद मठ" पुस्तक से उद्धृत की गई है। यह पुस्तक संन्यासियों के स्वतंत्रता संघर्ष पर आधारित है। पुस्तक में वर्णित है कि किस प्रकार संन्यासियों ने भारत पर आक्रमण करने वालों को धूल चटा दिया था? समाज जागरण के साथ प्रत्यक्ष संघर्ष की प्रेरणा भी इन संन्यासियों ने दी थी। कई संघर्षों का स्वयं नेतृत्व भी किया था। बहुत कम लोगों को ज्ञात है कि संन्यासियों के संघर्ष का प्रारंभ बिहार के जंगलों से हुआ था।

बक्सर के युद्ध के बाद अंग्रेजों का शासन देश पर स्थापित हुआ। देश की सत्ता जब मुगलों के हाथ से निकलकर अंग्रेजों के पास गई तो स्वाभाविक रूप से किसानों व जमींदारों से कर वसूलने का अधिकार भी अंग्रेजों के पास चला गया। लेकिन मुगलों और अंग्रेजों के सुनने का तरीका अलग था। मुगलों के समय अगर कोई कर नहीं दे पाता था तो वे उनके नाम पर टैक्स चढ़ा देते थे। अंग्रेज इससे विपरीत जो कर देने में असमर्थ होता था, उसकी जमीन की बोली लगाकर बेच देते थे। अंग्रेजों के शोषण व्यवस्था के खिलाफ देशभर में आंदोलन प्रारंभ हुआ। अंग्रेजों के छल के विरुद्ध सबसे पहले संन्यासी ही सामने आए। उन्होंने बेघर बेदखल हुए किसान, कारीगर और मुगल साम्राज्य के सेवा के बेरोजगार सैनिकों को संगठित कर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ किया। इनका लक्ष्य भारत में स्वदेशी शासन व्यवस्था लागू करना था। इसी उद्देश्य से इन लोगों ने अपना घर परिवार छोड़कर स्वयं को मातृभूमि की सेवा में समर्पित किया था।

जब सारण में फतेह बहादुर शाही ने संघर्ष का भी बिलकुल फूंका तो उनकी सहायता करने संन्यासी ही सबसे पहले आए थे। कुछ इतिहासकार तो यह भी मानते हैं कि संन्यासियों ने ही उन्हें संघर्ष के लिए प्रेरित किया था। 1765 से 1800 ई तक फतेह बहादुर शाही ने अंग्रेजों से लगातार संघर्ष कर उन्हें नाकों चने चबवा दिए थे। महाराजा चेत सिंह की सहायता के लिए भी फतेह बहादुर शाही गए थे। इस युद्ध में उनका बड़ा बेटा मर गया। फतेह बहादुर शाही ने अंग्रेजी सेना को चुनार की तरफ भागने के लिए मजबूर कर दिया था। फतेह बहादुर शाही राणा प्रताप की तरह बरसों जंगल में रहे लेकिन न अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार की और ना ही अंग्रेजों को अपने राज्य कर वसूल ने दिया। अंग्रेजों ने खींझकर कहा था कि उन्हें उतनी

परेशानी पेशवा से नहीं हुई, जितनी परेशानी फतेह बहादुर शाही से हुई। संन्यासी इस पूरे संघर्ष में उनके साथ थे।

संन्यासी पूरे देश में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष के वाहक थे। पराधीन जाति के मुक्ति के लिए सर्वस्व त्याग, मातृभूमि में अचल भक्ति, अन्याय के विनाश और न्याय की प्रतिष्ठा के लिए संन्यास व्रत धारण करने वाले पूरे देश में अलख जगा रहे थे। डॉ. भूपेंद्र नाथ दत्त के अनुसार ढाका के रमणा के काली मंदिर के महाराष्ट्रीय स्वामी जी कहा करते थे कि संन्यासी योद्धा ''ॐ वंदे मातरम'' का रणनाद करते थे। यह स्थानीय नागरिकों की सहायता से ईस्ट इंडिया कंपनी की कोठियों और जमींदारों की कचहरियों को लूट लेते थे। भले ही ब्रिटिश शासको ने इन्हें डकैत की संज्ञा दी लेकिन यथार्थ इसके विपरीत था। यह अंग्रेजों और उनके दलाल के खिलाफ संघर्ष करते थे। ऐसा कोई भी दृष्टांत नहीं है, जिसमें इन्होंने गरीबों को सताया हो। अपितु भूख से मरते किसानों को संन्यासी योद्धाओं ने सक्रिय सहायता की। उन्हें खाने के लिए अन्न और रहने के लिए आश्रय की व्यवस्था की। उनके साथ मिलकर ब्रिटिश सेवा के खिलाफ संघर्ष किया।

पटना और सारण

अंग्रेजों की कुटिलता के विरुद्ध संन्यासियों ने कई स्थानों पर संगठित हमले किए। 1767 में उनके आंदोलन का प्रमुख केंद्र पटना बन गया। यहां इन्होंने एक बड़ी सेना गठित की। इस सेना ने पटना की ईस्ट इंडिया कंपनी की कोठी और अंग्रेजों के जमींदारों को लूट लिया। इसी प्रकार सारण जिले में भी 5000 की संगठित सेना ने आक्रमण किया। इन दो सेना के साथ कंपनी का भयंकर युद्ध हुआ। पहले युद्ध में अंग्रेज पराजित हुए। संन्यासी समाज के नेतृत्व में एकत्रित सेना का किले पर अधिकार हो गया। परंतु उनके पास सिर्फ मातृभूमि की सेवा के लिए मर मिटने की हिम्मत थी। अंग्रेजों की कुटिलता के विरुद्ध मन में एक उबाल था लेकिन सैन्य रूप से यह उतने सबल नहीं थे। अतः जब कंपनी की बड़ी सेना तोपों के साथ आई तो इन्हें किले से हट जाना पड़ा।

पूर्णिया

पूर्णिया में भी संन्यासियों ने 1770– 71 में किसानों को एकत्रित कर अंग्रेजों के ऊपर आक्रमण किया था। अंग्रेज इन्हें हराने और 500 लोगों को कैद करने में सफल हुए थे। इन कैदियों से अंग्रेज अधिकारियों को जानकारी मिली कि सभी कैदी स्थानीय किसान थे। देखने में तो लगता था कि किसान ही युद्ध कर रहे हैं लेकिन इसकी योजना और नेतृत्व संन्यासियों के हाथ में थी। 30 दिसंबर, 1772 को रंगपुर शहर के समीप श्यामगंज के मैदान में इन पर अंग्रेजों ने आक्रमण किया। इनके चतुर नेताओं ने हार कर भागने का बहाना किया और टॉमस की सेना को पास के जंगल में खींच ले गए। विजय को सुनिश्चित मान अंग्रेज सेना ने अपने कारतूस समाप्त कर दिए। इसके बाद यह लोग अंग्रेज सेना पर टूट पड़े। इस अंचल के सभी गांव के किसान तीर– धनुष से लेकर लाठी– डंडे तक से अंग्रेज सेना पर हमला कर रहे थे। सेनापति टॉमस ने अपनी भारतीय सेना को इनपर हमला करने का आदेश दिया। किंतु इन सैनिकों ने अपने देश के किसानों पर आक्रमण करने से मना कर दिया। अंततः अंग्रेज सेना हारकर भाग खड़ी हुई। इस युद्ध में टॉमस मारा गया। इस संबंध में रंगपुर के सुपरवाइजर पालिंग ने रेवेन्यू काउंसिल 31 दिसंबर, 1772 को एक पत्र लिखा –

''किसानों ने हमारी सहायता तो नहीं की बल्कि उन्होंने लाठी आदि लेकर संन्यासियों की तरफ से युद्ध किया। जो अंग्रेज सैनिक जंगल की लंबी झाड़ियां के अंदर छिपे थे, किसानों ने उन्हें खोज कर बाहर निकाला और उसे मौत के घाट उतारा। जो अंग्रेज सैनिक गांव में घुसे, किसानों ने उनकी हत्या की और उनके बंदूक पर कब्जा कर लिया।''

यह पत्र स्वयं में प्रमाण है कि संन्यासी किस रणनीति के तहत अंग्रेजों से इस देश को मुक्त करने के लिए संघर्ष कर रहे थे?

व्यक्ति से बनती है संस्था

बिहार के प्रतिभाशाली युवक हर समय एक नई लकीर खींचते हैं। आम मान्यता यह है कि प्रतिष्ठित संस्थान से पास किए हुए युवा ही अच्छी नौकरियों में जा सकते हैं लेकिन कुछ लड़के इस भ्रम को तोड़ते हुए भी दिखते हैं। आज भी बिहार में आईआईटी क्रैक करने वाले लड़कों में सर्वाधिक सरकारी विद्यालयों से निकले हुए लड़के होते हैं। इसी प्रकार आईआईटी में प्रवेश को अच्छी नौकरियों की गारंटी माना जाता है। लेकिन आईआईटी में प्रवेश करने के बाद भी कई प्रतिभाशाली युवाओं को अच्छी नौकरी नहीं मिलती। इसके विपरीत सामान्य इंजीनियरिंग संस्थानों से निकले हुए लड़के भी बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। उनमें से एक नाम सीतामढ़ी के सुकेश कुमार का भी है।

सीतामढ़ी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, डुमरा के मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के 2020 बैच के छात्र सुकेश कुमार का चयन परमाणु ऊर्जा विभाग में हुआ है। यह उपलब्धि न केवल सुकेश के लिए बल्कि पूरे राज्य के लिए गर्व का क्षण है। सुकेश का चयन परमाणु ऊर्जा विभाग के स्टाइपेंडियरी ट्रेनिंग स्कीम (कैटेगरी वन) के तहत हुआ है। यह स्कीम विशेष रूप से उन होनहार छात्रों के लिए है, जो अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हैं और देश की उन्नति में योगदान देना चाहते हैं। सुकेश ने अपनी लगन और मेहनत से यह स्थान अर्जित किया है।

सुकेश की ट्रेनिंग हैदराबाद स्थित न्यूक्लियर फ्यूल कॉम्प्लेक्स में होगी, जो उनके करियर के लिए एक बड़ा अवसर है। यह उपलब्धि सीतामढ़ी इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के लिए भी एक ऐतिहासिक क्षण है, क्योंकि संस्थान के किसी छात्र का पहली बार इस प्रतिष्ठित विभाग में चयन हुआ है। सुकेश की सैलरी जानकर हर कोई हैरान है। इसके अलावा, उन्हें विभाग की ओर से पढ़ाई के लिए किताबों, कॉपियों और अन्य शैक्षणिक सामग्रियों के लिए छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाएगी। ट्रेनिंग कार्यक्रम कुल 24 महीने का होगा, जिसमें पहले 6 महीने क्लासरूम में सैद्धांतिक शिक्षा दी जाएगी। इसमें विशेष परमाणु विज्ञान और परिचालन तकनीक की जानकारी दी जाएगी।इसके बाद के 18 महीने प्रायोगिक प्रशिक्षण पर केंद्रित होंगे। इसमें सुकेश को परमाणु ऊर्जा विभाग के कामकाज और तकनीकी प्रक्रियाओं की गहन जानकारी दी जाएगी। ट्रेनिंग के दौरान पहले वर्ष में 24,000 रुपए और दूसरे वर्ष में 26,000 रुपए मासिक स्टाइपेंड मिलेगा। इसके अतिरिक्त, विभाग द्वारा आवास सुविधा और शैक्षणिक सामग्री के लिए छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाएगी। उसके बाद उसकी नियुक्ति सहायक वैज्ञानिक के पद पर होगी। नियुक्ति के बाद उसका वेतन 4.49 लाख रुपये होगा।

सुकेश को यह सफलता अचानक प्राप्त नहीं हुई। इसके पीछे वर्षों की साधना है। सुरेश पढ़ाई में सदैव अव्वल रहे। 2020 के स्नातक सुरेश का अकादमिक रिकॉर्ड हमेशा अच्छा रहा। संस्थान के मीडिया इंचार्ज और मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. आशीष कुमार ने सुकेश को बधाई दी और कहा कि यह संस्थान के लिए गर्व का क्षण है। यह न केवल सुकेश की मेहनत का परिणाम है बल्कि संस्थान के समग्र शैक्षणिक माहौल और संस्थान की गुणवत्ता का भी प्रमाण है।

आवश्यक है सर्दी से सुरक्षा

सर्दियाँ जैसे–जैसे नजदीक आती हैं, आसपास का माहौल ठंडा, धीमा और कभी–कभी मुश्किलों से भरा हो जाता है। खेतदृखलिहान की नमी, सुबह की ओस, पछुआ हवा और शीतलहर गाँव के लोगों के स्वास्थ्य पर सीधा असर डालते हैं। ऐसे मौसम में जरूरी है कि लोग सावधानियाँ अपनाएँ, जिससे सर्दी–जुकाम, बुखार और मौसमी संक्रमण से खुद को सुरक्षित रखा जा सके।

सुबह–शाम की कड़ाके की ठंड से दूरी रखें

सुबह और शाम तापमान सबसे कम होता है। इसी समय ठंड लगने की संभावना सबसे अधिक रहती है।कोशिश करें कि सुबह देर से बाहर निकलें। शाम ढलने से पहले काम निपटा लें। बुजुर्ग, बच्चे और गर्भवती महिलाएँ इस दौरान बाहर न जाएँ।

गीले और हल्के कपड़ों से बचें

गाँव में काम करते समय कपड़े गीले होना आम बात है, लेकिन गीले कपड़ों में रहना निमोनिया का खतरा बढ़ा देता है। गीले कपड़े तुरंत बदलें। ऊनी और मोटे कपड़ों को लेयर में पहनें, इससे शरीर गर्म रहता है।

अंगीठी से गर्माहट लें, पर सावधान रहें

ठंड भगाने के लिए अंगीठी और लकड़ी की आग अच्छा विकल्प है, लेकिन थोड़ी सावधानी जरूरी है।

बंद कमरे में अंगीठी न जलाएँ, इससे दम घुट सकता है। बच्चों को आग से दूर रखें। राख और कोयले को बुझाकर ही घर में रखें।

शीतलहर से बचाव जरूरी है। पछुआ हवा या बक्खर हवा शरीर को तेजी से ठंडा कर देती है। इसलिए

- सिर, कान और मुँह को ढँककर रखें।
- खेतों में काम करते समय बीच–बीच में गर्म चाय या काढ़ा पिएँ।
- खाने–पीने में गर्माहट और पौष्टिकता रखें।
- ठंड में शरीर को ऊर्जा और गर्मी की जरूरत बढ़ जाती है।
- अदरक, गुड़, तिल, मूँगफली, सूप और हरी सब्जियों का सेवन करें।
- खाली पेट बाहर जाने से बचें।
- ठंडा पानी न पिएँ, गुनगुना पानी हमेशा बेहतर है।

धूप का पूरा लाभ उठाएँ

- ग्रामीण घरों में धूप कम आती है, इसलिए जहाँ धूप मिले, वहाँ कुछ समय जरूर बिताएँ।
- सुबह की धूप विटामिन डी का अच्छा स्रोत है।
- बच्चों और बुजुर्गों को प्रतिदिन 15–20 मिनट धूप में बैठाएँ।
-
- कोहरे और ओस वाली रातों में बाहर कम रहें
- कोहरे में नमी शरीर को जल्दी ठंडा कर देती है।
- देर रात बाहर बैठने या घूमने से बचें।
- खेतों में ओस और कोहरे वाली रात में काम न करें।

सफाई और पानी के उपयोग में सावधानी

सर्दियों में लोग ठंड की वजह से नहाने से बचते हैं, जिससे संक्रमण बढ़ सकता है।
• धूप में गुनगुने पानी से नहाएँ।
• पीने का पानी हमेशा उबालकर या गर्म करके पिएँ।

बुजुर्गों और बच्चों का खास ध्यान रखें

इनकी प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण इन्हें बीमारी जल्दी पकड़ती है।

- समय पर गर्म कपड़े, कंबल और रजाई दें।
- हल्की खाँसी–जुकाम को भी नजरअंदाज न करें।
- हल्दी वाला दूध या काढ़ा दिनचर्या में रखें।
- बीमारी के शुरुआती लक्षणों को हल्के में न लें।
- सर्दियों की छोटी बीमारी भी तेजी से बढ़ सकती है।
- हाथ–पैर सुन्न होना,बार–बार ठंड लगना,तेज खाँसी,साँस लेने में दिक्कत,लगातार सिरदर्द या बुखार।
- इनमें से कोई भी लक्षण दिखे तो तुरंत इलाज कराएँ।

आने वाले दिनों में ठंड के हालात कैसे रहेंगे?

- मौसम विभाग के अनुसार आने वाले दिनों में ठंड और शीतलहर दोनों बढ़ने की संभावना है।
- रात का तापमान लगातार नीचे जाएगा।
- सुबह के समय कोहरा और ओस और घना होगा।
- उत्तर–पश्चिम से आने वाली हवा तापमान को और गिरा सकती है।
- कई जिलों में पारा 8–10 डिग्री तक नीचे जाने का अनुमान है।
- बुजुर्गों और बच्चों के लिए यह समय ज्यादा संवेदनशील रहेगा।

ऐसे में ग्रामीण परिवारों को सावधानी दोगुनी करनी होगीकृघर गर्म रखें, रात में दरवाजे–खिड़कियाँ अच्छी तरह बंद करें और बाहर निकलते समय पूरे शरीर को ढँककर निकलें।

(वैद्य अशोक शर्मा से पत्रकार दीपशिखा की वार्ता पर आधारित)

बिहार में नेपाल जैसी हिंसा भड़काने की साजिश

बिहार विधानसभा चुनाव 2025 की मतगणना समाप्त होने के ठीक बाद जिले में नेपाल आंदोलन (ळमद´ च्तवजमेज) की तर्ज पर अशांति और दंगा भड़काने की एक गंभीर साजिश का पर्दाफाश हुआ है।

मुजफ्फरपुर की बताई जा रही युवती ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स (ट्विटर) पर एक भ्रामक वीडियो प्रसारित किया। इसे पुलिस ने समाज में नफरत और हिंसा फैलाने की कोशिश माना है।

साइबर थाने के जमादार दयाल नारायण सिंह ने इस मामले में प्राथमिकी कराई है। इसमें करिश्मा अजीज नामक युवती (एक्स आईडीरू /करिश्माअजीज) को मुख्य आरोपित बनाया है। प्राथमिकी के अनुसार 16 नवंबर की शाम को जिला के सोशल मीडिया कोषांग से सूचना मिली कि करिश्मा अजीज ने अपने एक्स हैंडल पर 15 सेकंड का एक वीडियो क्लिप प्रसारित किया है।

इसमें भीड़ और प्रदर्शन की बात कहकर यह दर्शाने की कोशिश की गई थी कि बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के परिणाम घोषित होने के बाद राज्य की सड़कों पर युवाओं का वास्तविक विरोध प्रदर्शन हो रहा है।

नकली वीडियो से दंगा भड़काने की कोशिश

पुलिस ने स्पष्ट किया है कि मतगणना के उपरांत बिहार में किसी भी प्रकार का ऐसा वास्तविक विरोध–प्रदर्शन दर्ज नहीं हुआ है। प्रसारित वीडियो नकली और भ्रामक था। इसे वास्तविक प्रदर्शन का रूप देकर इंटरनेट मीडिया पर जानबूझकर प्रसारित किया गया।

उल्लेख किया कि वीडियो की सामग्री और प्रस्तुति से ऐसा प्रतीत होता है कि युवती बिहार में भी हाल ही में नेपाल में हुए जेन–जी जैसा हिंसक विरोध–प्रदर्शन का वातावरण तैयार करने या उसे उकसाने की कोशिश कर रही थी। साइबर थाने की पुलिस इसे नेपाल जैसा हिंसा भड़काने की करतूत मानकर कड़ी कार्रवाई कर रही है।

(साभार : दैनिक जागरण)

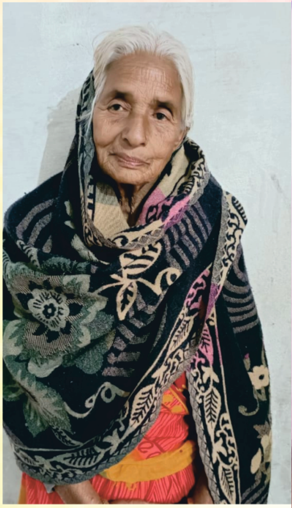

लाइची कुंवर से रचा इतिहास

सिवान की रहने वाली लाइची कुंवर के द्वारा एक इतिहास रचा गया। सिवान में पहली बार किसी का मरणोपरांत नेत्रदान हुआ। ग्राम धर्म मकरियार, बदली मोर, सिवान की निवासी 90 वर्षीया लाइची कुंवर की इच्छा के अनुसार उनके परिजनों ने उनका नेत्रदान किया।

इस संबंध में उनके पुत्र भारत भूषण पांडे ने बताया कि सात आठ वर्ष पूर्व पूरे परिवार ने दधिचि देहदान समिति को नेत्रदान संबंधी फॉर्म भर रहे थे यह देखकर उनकी दादी को भी इच्छा हुई की उन्हें भी नेत्रदान कर देना चाहिए उन्होंने दधीचि देवदान समिति से कागजात लेकर उसे भरवारा और इच्छा व्यक्त की कि उनके मरने के बाद उनके नेत्र दान कर दिया जाए ताकि किसी और को रोशनी मिल सके।

लाइची कुंवर का निधन 18 नवंबर, 2025 को हो गया। अंतिम समय तक वे अपना नित्य क्रिया कर्म स्वयं कर लेती थी। मैरवा के दरौली मार्ग पर स्थित रहटउआं गांव की निवासी इलायची कुंवर जीवन भर धार्मिक कार्यों में सक्रिय रही। उन्हें तीन बेटा और एक बेटी थी। उनके पति स्वर्गीय सकलदेव पांडे का निधन हृदय आघात से 6 अगस्त, 2003 को हो गया था। अभी परिवार में तीन बेटे हरेंद्र पांडे, नागेंद्र पांडे और देवेंद्र पांडे अपने सभी परिजनों के साथ रहते हैं। इस बार के बिहार विधानसभा चुनाव में लाइची कुंवर ने भी मतदान किया था।

नेत्रदान की प्रक्रिया में दधीचि देवदान समिति पटना के प्रांतीय सचिव आनंद प्रधान ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कार्य से पटना के आइजीआइएमएस की टीम भी आई थी इसमें संस्था के नेत्र अधिाकोष प्रमुख डॉक्टर निलेश मोहन डीआर विभूति प्रसन्न तथा टीम के डॉक्टर अंशुमन बलदेव कुमार और मारुति नंदन जी ने कॉर्निया संग्रह की पूरी प्रक्रिया को सफलतापूर्वक संपन्न किया।

RNI No.-BIHHIN/2003/12538 Postal Reg:R-10/NP-39/Patna GPO/23-25

बिहार विधानसभा चुनाव, 2025 की प्रमुख सुर्खियां

① स्वतंत्रता के बाद बिहार में सर्वाधिक मतदान हुआ। इस बार बिहार में 66.91% मतदान हुआ, जो एक रिकॉर्ड है। महिलाओं ने 71.6% मतदान किया। यह पुरुषों से काफी अधिक था। पुरुषों का मतदान 62.08% हुआ। पुरुषों ने सर्वाधिक मतदान 2000 में किया था। उस समय पुरुषों का मतदान प्रतिशत 70.71% था। जबकि उस समय महिलाओं की उपस्थिति सिर्फ 53.28% थी। वर्ष 2020 की तुलना में 11% से ज्यादा महिलाओं ने वोटिंग की।

② बिहार के 7 जिलों में महिलाओं ने पुरुषों से 14 प्रतिशत या उससे भी अधिक मतदान किया। किशनगंज में यह अंतर सबसे अधिक 19.05% था। इसके बाद मधुबनी 18.04%, गोपालगंज में 17.72%, अररिया में 14.43% ,दरभंगा में 14.41% और मधेपुरा में 14.24% था।

③ इस बार के चुनाव में कुल मतदाताओं की संख्या 7 करोड़ 42 लाख मतदाता थी। इसमें 3.92 करोड़ मतदाता पुरुष और 3.50 करोड़ मतदाता महिलाएं थी। इसमें 14 लाख मतदाता ऐसे थे, जो चुनाव में पहली बार अपने मताधिकार का प्रयोग करते।

14 हजार ऐसे मतदाता थे, जिनकी आयु 100 वर्ष से अधिक थी। अगर 85 वर्ष से अधिक आयु के मतदाताओं की बात करें तो उनकी संख्या चार लाख 4 हजार थी।

④ बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर पूरे बिहार में 9 हजार पोलिंग स्टेशन बनाए गए थे। इनमें 1हजार पोलिंग स्टेशन तो केवल महिलाओं द्वारा संचालित थे। बिहार में इस बार 90 हजार 712 बूथ बनाए गए थे।

⑤ इस चुनाव को देखने 6 देशों के 16 प्रतिनिधि आए थें।

बिहार के चुनाव को हिंसा रहित एवं भ्रष्टाचार मुक्त करने के लिए चुनाव आयोग ने भी मुकम्मल तैयारी की थी। बिहार 4 लाख 53 हजार पुलिस अधिकारी, 28 हजार 370 मतदाता कर्मचारी और 17 हजार 875 माइक्रो आब्जर्वर की नियुक्ति की गई थी। इसके अलावा 243 विधानसभा क्षेत्रों के लिए 243 जनरल ऑब्जर्वर, 38 पुलिस ऑब्जर्वर और 67 एक्सपेंडिचर आब्जर्वर नियुक्त किए गए थे। चुनाव के दौरान किसी प्रकार की कोई हिंसा न हो, इसके लिए केंद्रीय बल की 1 हजार से अधिक कंपनियां तैनात की गई थी।

डाक टिकट

पता

पता- विश्व संवाद केंद्र, 104-105, सूर्या अपार्टमेंट, 10 वां तल, फ्रेजर रोड, पटना-800001